Raga of the Month November 2024
Raga Chittamohini and its Scale-Congruent Ragas
राग चित्तमोहिनी और उसके समस्वरी राग

राग चित्तमोहिनी पंडित कमलाकर परळीकर जी का सृजन है। उन्हें इस राग की कल्पना काशी विश्वनाथ मंदिर में दर्शन के समय मन में आई ऐसा उन्होंने बताया। इस राग में दोनों गंधार, कोमल निषाद, रिषभ और धैवत शुद्ध, और पंचम स्वर लगते हैं। मध्यम स्वर वर्जित है।

स्वरों को देखते हुए हम यह मान सकते हैं की राग जनसम्मोहिनी में कोमल गंधार का प्रयोग करने से इस राग का स्वरूप मिलता है। इस राग में हम कलावती, जोग , शिवरंजनी आदि रागों की छटाएँ देख सकते हैं।

इसी स्वर समुदाय से (सा, रे, ग, ग, प, ध , नि) कई नवराग निर्माण हुए हैं। जैसे कि, कलारंजनी - पंडित हरिप्रसाद चौरसिया, कलावर्धनी - पंडित रसिकलाल अंधारिया, सुरंजनीका दूसरा प्रकार - पंडित रवि शंकर, वेदी की ललित- पंडित दिलीपचंद्र वेदी, राग लगनगंधार में भी यही स्वर प्रयुक्त होते हैं; मगर उसमें गंधार के स्वरान्तर भी दिखाए जाते हैं। इस स्वर समुदाय के मूर्च्छना कुटुंब में राग पूर्व कल्याण तथा राग दीपावली शामिल हैं।

आज के ऑडियो में हम पंडित कमलाकर परळीकर जी से राग स्वरमोहिनी, पंडित रसिकलाल अंधारिया जी से राग कलावर्धनी और पंडित दिलीप चंद्र वेदीजी से राग वेदी की ललित इन रागोंके गायन का अंश सुनेंगे।

(डॉक्टर कमलाकर परळीकर जी ने औरंगाबाद के संगीत तज्ञ पंडित स. भ. देशपांडे जी से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। वे लगभग पचास साल संगीत अध्यापन का कार्य कर रहे हैं। उन्हें अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए; इनमें विशेष पुरस्कार है, सुरमणि तथा पूर्णवाद संगीत अकादमी की तरफ से जीवन गौरव पुरस्कार।)

आभार : पंडित कमलाकर परळीकर, पंडित यशवंतबुवा महाले , ऑडियो - यू ट्यूब

01-11-2024

Link to the list of 160+ "Raga of the month" articles

@ Archive of ROTM Articles - https://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx